प्रेमचंद साहित्य संस्थान गोरखपुर एवं राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ई-कार्यशाला (15 जुलाई से 30 जुलाई 2020)

प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?

■ प्रस्तुति : प्रिया

Govt. Girls P G College GHAZIPUR (U.P.)

समय के साथ-साथ लेखक को पढ़ने-पढ़ाने का नजरिया भी बदलता रहता है। ज्यों-ज्यों समय कठिन होता है, त्यों-त्यों लेखक की प्रासंगिकता बढ़ती जाती है। प्रेमचंद हिंदी कथा साहित्य के एक ऐसे महत्वपूर्ण लेखक हैं, जिनको पढ़े बिना हिंदी कथा साहित्य का ज्ञान अधूरा है। प्रेमचंद और उनका साहित्य भारत के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य हिस्सा है। प्रेमचंद के समय से लेकर अब तक बहुत से शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं और अभी भी यह कार्य निरंतर जारी है। प्रेमचंद पर हुए शोध से इन्हें जानने-समझने के कई औजार विकसित हुए हैं। इस क्रम में उनकी बहुत सी अप्रकाशित कृतियाँ प्रकाश में आ चुकी हैं और बहुत सी अभी आनी बाकी हैं, हिंदी के पाठकों को आज इसे जानने और समझने की जरुरत है। इसके साथ ही जब साहित्य और समाज में नये सन्दर्भ और विमर्श जुड़ जाते हैं तो इन संदर्भों के आलोक में भी रचनाओं का पुनःपाठ और उसके सन्दर्भों पर नवीन दृष्टिकोण से चिंतन करना आवश्यक होता है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए डॉ निरंजन कुमार यादव (राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर) ने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया, साथ ही इसमें मैंने भी प्रतिभाग किया। यह कार्यशाला विभिन्न दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण थी। पहला यह कि जब आनलाइन कार्यक्रमों की धूम मची हुई हो तो ऐसे में गुणवत्तापूर्ण पूरी ईमानदारी और लगन के साथ इस कार्यशाला का आयोजन किया जाना, एक बड़ी उपलब्धि थी। जिसमें देश के लगभग 17 राज्यों से शोधार्थी, प्राध्यापक एवं आचार्यों ने प्रतिभाग किया। दूसरा, हिंदी भाषी राज्य के साथ गैर हिंदी भाषी राज्य के विद्वान और प्रतिभागियों ने प्रेमचंद को पढ़ने और पढ़ाने का अनुभव साझा किया। तीसरा, इस पूरे कार्यशाला में प्रत्येक दिन 1 घंटा प्रतिभागी सत्र का आयोजन होता था, जिसमें प्रेमचंद सम्बन्धी प्रश्नों और जिज्ञासाओं पर बात-चीत होती थी। यह सुखद रहा कि यह कार्यशाला एक तरफा न होकर, यह व्याख्यान के साथ-साथ पाठ और संवाद का भी कार्यक्रम बना रहा। इस कार्यशाला के सम्बन्ध में वीरेन्द्र यादव, ए अरविंदाक्षन, सदानन्द शाही, चितरंजन मिश्र, रोहिणी अग्रवाल, दिनेश कुशवाह, दिनेश कर्नाटक एवं गजेन्द्र पाठक जैसे कई मूर्धन्य विद्वान, कवि, आलोचक एवं साहित्यकारों की यह टिप्पणी कि—'अब ऐसे कार्यक्रम बहुत कम होते हैं। जहाँ शोध से सामने आए नवीन तथ्यों के साथ विषयों की विविधता पर बात की जा रही हो।' यह उक्ति हमारे लिए उत्प्रेरक का काम करती है।

यह मेरे और मेरे जैसे अनेक लोगों के लिए पहला अवसर था जहाँ एक ही मंच पर भारत के अनेक

ग्राम-मठिया धीर, पोस्ट रामकोला, कुशीनगर

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001

विश्वविद्यालयों और संस्थाओं से जुड़े उच्च कोटि के वक्ताओं को सुना गया और उनसे संवाद किया गया। जुड़ने से पहले मेरे मन में भी यही था कि प्रेमचंद पर क्या सुनना! सब वही ढाक के तीन पात लोग बताएँगे, लेकिन कार्यक्रम से जुड़ने के बाद मेरी पूरी अवधारणा ही बदल गयी। एक साथ किसी लेखक को मुक्कमल रूप से पढ़ने और समझने का यह मेरा पहला अनुभव था। इस ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के आयोजन के लिए निरंजन कुमार और उनकी टीम को शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद। कोरोना काल जैसी विपरीत परिस्थितियों में इतनी लंबी कार्यशाला आयोजित करने के लिए वास्तव में बहुत साहस और धैर्य की आवश्यकता थी, जिसे उन्होंने कर दिखाया। पूरे कार्यक्रम का संयोजन बेहतरीन तरीके से किया गया, कहीं भी कोई दुहराव देखने को नहीं मिला। यह कार्यशाला मुख्यतः साहित्य प्रेमियों, शोधार्थियों तथा सुधी पाठकों के वैचारिक विमर्श हेतु आयोजित की गयी थी। जिसमें प्रेमचंद के उपन्यास, कहानियाँ, कथेतर गद्य, पत्रकारिता, स्त्री जीवन, दलित सन्दर्भ आदि विषयों पर हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वानों ने अपने व्याख्यान दिए। जिसका संक्षिप्त एवं क्रमबद्ध विवरण निम्नवत है–

1. 15 जुलाई 2020–कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र (मुख्य अतिथि–प्रो. सदानंद शाही, अध्यक्ष–प्रो. चित्तरंजन मिश्र)

15 जुलाई से 30 जुलाई के मध्य 'राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय' गाजीपुर एवं 'प्रेमचंद साहित्य संस्थान' गोरखपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' विषय पर 16 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आज उद्घाटन हुआ। जिसके मुख्य अतिथि प्रेमचंद साहित्य संस्थान के निदेशक एवं हिंदी विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सदानंद शाही थे। उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' से पूर्व यह बताया कि 'प्रेमचंद को क्यों पढ़ें?' प्रोफेसर शाही ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रेमचंद आत्मकेंद्रीयता को तोड़कर हमारे मन को उदात्त बनाने वाले लेखक हैं। वह पाखंड विरोधी हैं। वह जाति, जन्म एवं जेंडर के स्वरुप में हमारे जीवन एवं समाज में आए विडंबना को चिन्हित कर उस पर सवाल उठाने वाले लेखक हैं। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों से गुजरते हुए हम बखूबी अपने देश समाज एवं जीवन के स्पंदन को महसूस कर सकते हैं। वह अपने कथानायकों एवं चरित्रों के माध्यम से हमारी आत्मा पर जमी हुई मैल को हटाने का काम करते हैं। मुक्तिबोध ने उनके बारे में ठीक ही कहा था कि 'प्रेमचंद आत्मा के शिल्पी' हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जो भी प्रतिभागी इस कार्यशाला में आज सम्मिलित हो रहे हैं वह इस कार्यशाला के समाप्त होने तक वही नहीं रह जाएंगे। उनके विचार में एक अद्भुत परिवर्तन आ चुका

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001

होगा। साहित्य और समाज को देखने की एक नई दृष्टि विकसित हो चुकी होगी। वह जिस समाज एवं जीवन की परिकल्पना कर रहे हैं इस कार्यशाला के बाद उससे और बेहतर परिकल्पना बन जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर चितरंजन मिश्र ने कहा कि समय ज्यों-ज्यों गाढ़ा एवं कठिन होता जायेगा त्यों-त्यों प्रेमचंद का साहित्य प्रासंगिक होता जाएगा। प्रेमचंद हिंदी साहित्य में तुलसी और कबीर के बाद सबसे अधिक पढ़े जाने वाले एवं लोकप्रिय लेखक हैं। तुलसी और कबीर के पास जनता तक पहुँचने का साधन भक्ति एवं अध्यात्म का है जबकि प्रेमचंद जनता तक इन दोनों चीजों को नकार कर पहुँचते हैं। प्रेमचंद लोक चेतना के लेखक हैं।

इसी क्रम में 16 जुलाई 2020 को 'गोदान' विषय पर डॉ. विशाल विक्रम सिंह राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, 17 जुलाई 2020 को 'गबन' विषय पर प्रो श्रद्धा सिंह काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, 18 जुलाई 2020 को 'कर्मभूमि' विषय पर डॉ. प्रवीण यादव, 19 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की विरासत' विषय पर डॉ. कमलेश वर्मा, 20 जुलाई 2020 को 'प्रेमाश्रम' विषय पर डॉ. अनिल अविश्रांत, 21 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की कहानियाँ' विषय पर दिनेश कर्नाटक, 22 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद का कथेतर गद्य' विषय पर लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, 23 जुलाई 2020 को 'सेवासदन' विषय पर डॉ. जनार्दन ,24 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद और किसान जीवन' विषय पर प्रो. राजेश मल्ल, 25 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद और पारिस्थितिकी' विषय पर प्रो. के वनजा एवं 'प्रेमचंद और हिंदी पत्रकारिता' विषय पर डॉ. राजीव रंजन, 26 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद की कहानियाँ-2' विषय पर प्रो. ए अरविंदाक्षन एवं 'निर्मला' उपन्यास पर प्रो. नामदेव गौड़ा, 27 जुलाई 2020 को 'रंगभूमि' विषय पर प्रो. दिनेश कुशवाह, 28 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद : विविध संदर्भ' विषय पर वीरेन्द्र यादव और 29 जुलाई 2020 को 'प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्त्री जीवन' विषय पर डॉ. प्रीति चौधरी एवं राष्ट्रवाद और प्रेमचंद विषय पर प्रो. राजकुमार का महत्वपूर्ण व्याख्यान एवं संवाद आयोजित हुआ।

30 जुलाई 2020 को कार्यशाला के समापन सत्र में मुख्य वक्ता प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखिका प्रोफेसर रोहिणी अग्रवाल थीं। उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा कि—प्रेमचंद आज भी इतने लोकप्रिय क्यों हैं? अगर इस बात पर मैं विश्लेषण करती हूँ तो यह पाती हूँ कि उनके पात्र जनमानस को अपनी ओर खींचते हैं। उनके पात्रों की विशेषता उनकी सरलता और उनकी पारदर्शिता है। लेकिन एक मुक्त पाठक की तरह ही नहीं एक कड़क आलोचक की तरह मैं उनके चरित्र चित्रण के इन दो विशेषताओं को देखूँ तो मैं कहूँगी कि उनके चरित्र पारदर्शी, सरल एवं सादगी पूर्ण चरित्र वाले हैं जो हमें छू रहे हैं।

कार्यक्रम के दूसरे विशिष्ट वक्ता प्रोफेसर गजेंद्र पाठक (हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद) थे। इन्होंने 'प्रेमचंद की इतिहास दृष्टि' पर अपनी बात रखते हुए कहा कि आप कल्पना करें कि शुक्ल जी के इतिहास में एक नहीं... दो त्रिवेणी है। एक त्रिवेणी है भक्ति आंदोलन की है और दूसरी है लोक जागरण की। रामविलास जी के शब्दों में कहे तो एक दूसरी त्रिवेणी है नवजागरण की। जिसमें तीन लोग हैं। एक भारतेंदु, दूसरे महावीर प्रसाद द्विवेदी और तीसरे प्रेमचंद। इस कार्यक्रम में अध्यक्षीय व्याख्यान प्रोफेसर सदानंद शाही (निदेशक, प्रेमचंद साहित्य संस्थान गोरखपुर) जी ने दिया। उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें' पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रेमचंद ने जिन समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है, वह समस्याएँ आज भी हमारे सामने मौजूद है। वह क्यों मौजूद हैं और उनका मौजूद होना प्रसन्नता की बात नहीं है बल्कि नए सिरे से सोचने और विचारने का विषय है। मैं धन्यवाद देता हूँ डॉक्टर निरंजन यादव को और उनके सभी साथियों विशेष रूप से संतन कुमार राम, शशिकला जायसवाल और राघवेन्द्र को कि उन्होंने 'प्रेमचंद को कैसे पढ़ें?' विषय पर इस कार्यशाला का आयोजन किया।

राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय गाजीपुर की प्राचार्य डॉ. सविता भारद्वाज ने सभी अतिथियों को आभार व्यक्त किया और कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए कार्यशाला के आयोजकों की सराहना की। विभागाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. संगीता मौर्य ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

यह कार्यशाला प्रशिक्षुओं के ज्ञानवर्धन में बड़ी सहायक और प्रेमचंद के सर्वांग लेखन से अवगत कराने में सफल रही है। 16 दिन में हम सब प्रेमचंदमय हो गए थे। उनका परिवेश, उनके पात्र जीवंत हो उठे थे। एक साथ हम लोगों ने प्रेमचंद को समग्रता में पहली बार पढ़ा। गाजीपुर जैसे छोटे शहर में इतना महत्वपूर्ण एवं व्यवस्थित आयोजन होना हम जैसे हिंदी के पाठकों को यह आश्वस्ति प्रदान करता है कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। छोटे-छोटे जगहों पर भी महत्वपूर्ण आयोजन हो रहे हैं लेकिन बड़े नामों के शोर में उनकी अनुगूँज दब जाती है।

●

प्राचार्य
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गाजीपुर-233001